मनोहरराय सरदेसाय : एक अप्रतिम व्यक्तित्व

रवीन्द्रनाथ मिश्र

कोंकणी एवं मराठी के लोकप्रिय कवि, चिन्तक, बहुभाषाविज्ञ प्रो. मनोहरराय सरदेसाय का जन्म गोवा की राजधानी पणजी में 18 जनवरी, 1925 को हुआ। मराठी के ख्यातनाम साहित्यकार लक्ष्मणराव सरदेसाई के पुत्र होने के कारण उन्हें सर्जनात्मक वातावरण और लेखन की ऊर्जा अपने पिता से विरासत में मिली। फलस्वरूप मनोहरराय सरदेसाई ने एक बार रचना पथ पर कदम रखा तो फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा। कोंकणी इनके आत्मा की भाषा थी जिसकी अस्मिता को लेकर वे आजीवन संघर्ष करते रहे। गोवा मुक्ति के बाद 1937 में कोंकणी भाषा को लेकर जब जनमत कराया गया तो मनोहरराय सरदेसाई ने उसमें महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। उसके बाद अपने सर्जन, सद्व्यवहार और मानवीय गुणों के कारण वे साहित्य जगत् में प्रसिद्धि के उच्च सोपानों पर चढ़ते ही गए। 1942 में माध्यमिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद देसाई जी भारत छोड़ो आन्दोलन में कूद पड़े। इनके राष्ट्र प्रेम को 'स्वतन्त्रताय', 'आमचो देस आमका जाय', 'जय पुण्यभू, जय भारता!', 'चलात परते' आदि कविताओं के माध्यम से जाना जा सकता है। मुम्बई विद्यापीठ से सन् 1947 में मराठी और फ्रेंच विषय से प्रथम श्रेणी में स्नातकोत्तर की परीक्षा पास करने के उपरान्त आपने वहीं के स्थानीय विल्सन कॉलेज में 52 तक फ्रेंच के व्याख्याता के रूप में कार्य किया। सन् 1952 में ही फ्रेंच सरकार से छात्रवृत्ति मिलने पर आप फ्रांस चले गए और वहीं से सोर्बोन विद्यापीठ से 'फ्रांस में भारत की प्रतिमा' विषय पर 1958 में पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। 1956 में इन्हें विश्व शरणार्थी परिषद हेलसिंकी में भारत के प्रतिनिधि के रूप में भेजा गया। 1960 में कुछ समय तक आकाशवाणी के विदेश विभाग में कार्य करने के पश्चात् वे मुम्बई के सौमय्या कॉलेज में फ्रेंच के व्याख्याता के पद पर कार्य किए और यहीं पर इनके 'आयज रे धोलार पडली बडी' नृत्य नाटिका का प्रकाशन और मंचन हुआ।

अध्ययन, अध्यापन और रचना पथ पर आगे बढ़ते हुए सरदेसाई जी ने 1962 में मडगाँव, गोवा में होने वाले आठवें अखिल भारतीय कोंकणी परिषद की अध्यक्षता के पद को बड़ी गरिमा से निभाया और 1964-70 तक कोंकणी भाषा मंडल, गोवा के अध्यक्ष रहे। 1966 में आप यूनिवर्सिटी टीचर्स एसोसिएशन के संस्थापक और अध्यक्ष बने और आपको कोंकणी कविराज तथा आकाशवाणी देशभक्ति गीत प्रतियोगिता तथा सन् 72 एवं 73 में क्रमशः गोवा कला अकादमी एकांकी लेखन के प्रथम तथा 'जायो-जुयो' कोंकणी

कविता-संग्रह के लिए गोवा कला अकादमी के विभिन्न पुरस्कारों से नवाजा गया। सन् 1977 में आपको सोवियत संघ जाने का सुअवसर प्राप्त हुआ उसके पश्चात् आपने सन् 1979-85 तक मुम्बई विद्यापीठ में रीडर के पद पर कार्य किया। देसाई जी को उनके प्रसिद्ध कोंकणी काव्य-संग्रह 'पिशोली' के लिए साहित्य अकादेमी एवं गोवा कला अकादेमी के पुरस्कार से सम्मानित किया गया। सन् 1985 में गोवा विश्वविद्यालय की स्थापना होने के पश्चात् मनोहरराय सरदेसाई को फ्रेंच और पोर्तुगीज विभाग का कार्य सौंपा गया। उसी वर्ष पेरिस में होने वाले भारत महोत्सव में भी आपने भाग लिया।

गोवा विश्वविद्यालय में सर्जन और अध्यापन का कार्य करते हुए फ्रेंच विभाग के आचार्य एवं अध्यक्ष के पद को भी सुशोभित किया और फिर यहीं से सेवामुक्त भी हुए। इसी दौरान 77 में आपको फ्रेंच सरकार 12-13 में गोवा राज्य का कला और संस्कृति एवं लाइंस क्लब इंटरनेशनल तथा 93, 94, 2000 एवं 2005 में क्रमशः राष्ट्रीय हिन्दी अकादमी 'सातवाहन', कला अकादमी 'गोमंत शारदा', 'उतरा' अनुवाद के लिए साहित्यिक काकोडकार आदि पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। आप 75-92 तक गोवा कोंकणी अकादेमी के उपाध्यक्ष तथा 1991 में कोंकणी विश्वकोश के सम्पादक रहे।

इन तमाम कार्यों और उपलब्धियों के मूल में उनकी सर्जनात्मक प्रतिभा और उनका अनूठा व्यक्तित्व रहा है। 1962 से उन्होंने रचनापथ पर 'आयज रे धोलार पडली (कंस-वध) गीत-नाट्य के प्रकाशन से कदम रखा। इसके बाद तो उनके 'गोयां तुज्या मोगाखातीर', 'जायात जागे' (64), 'रामगीता' (68), 'जायो-जुयो' (70), 'पिशोली' (78) (काव्य-संग्रह), साहित्य सुवाद (समीक्षा) 'शणैं गोंयबाब' (जीवनी कायी), 'जय पुण्यभू जय भारता' (स्फूर्तगीत), 'बाल्झाक' (फ्रेंच जीवनी कायी), 'कोंकणी शब्दकोश', History of Konkani Literature आदि रचनाओं के प्रकाशन का क्रम जारी रहा। इसके अतिरिक्त 'बेब्याचें काजार', 'भांगराची कुराड', 'माणकुली', 'मनोहर', 'गितां, गोड, गोड गितां', 'जादूचो कोंबो' और 'विवकोनन्द' आदि उनकी बाल साहित्य की रचनाएँ प्रकाशित हुईं। आपने रोमारोला (विवेकानन्द), बॉल्तेर (कांदिद), ज्यां पॉल सार्त्र (उतरां) और वीरेन्द्र भट्टाचार्य (आयलें आमचें राज्य) आदि की मूल रचनाओं का कोंकणी में अनुवाद कर प्रकाशित किया।

मनोहरराय सरदेसाई की रचनात्मक प्रतिभा से कोंकणी एवं अन्य समाज के लोगों में उन्हें काफी लोकप्रियता मिली। वे सबके अपने हो गए। उन्होंने साहित्य सर्जन का एक बहुत बड़ा भण्डार खड़ा किया। बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी सरदेसाई ने कोंकणी साहित्य की विभिन्न विधाओं को अपनी लेखनी से सजाया लेकिन उनकी प्रसिद्धि एक लोकप्रिय कवि के रूप में बनी। देसाई जी एक भले नेक इंसान थे। उनके परिवार में उनकी सहधर्मिणी श्रीमती प्रमिलाबाई, श्री सुनील एवं श्री उमेश दो पुत्र एवं एक पुत्री माया जिनकी शादी श्री दत्ता सरदेसाईजी से हुई है जो कि संयुक्त शिक्षा सचिव (गोवा सरकार) के पद पर कार्यरत हैं। मनोहरराय सरदेसाई जी हमारे गुरु प्रो. अरविन्द पाण्डेयजी के अभिन्न मित्र थे। उन्हीं के माध्यम से हमारी भी जान-पहचान बनी। देसाई जी के साथ बैठने और काम करने में रचनात्मक सुख की अनुभूति होती थी। मैंने सरदेसाई के साथ कई बार घंटों-घंटों बैठकर कोंकणी की कतिपय रचनाओं का हिन्दी में अनुवाद किया। आज भी उनके मृदुव्यवहार की याद आती है। वे मुझसे बहुत स्नेह करते थे। गोवा विश्वविद्यालय से सेवामुक्त होने के बाद जब कभी वे विश्वविद्यालय आते तो प्रायः मुझसे मिलकर ही जाते थे। 22 जून, 2006 को ऐसे अप्रतिम बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी कोंकणी रचनाकार के निधन से सम्पूर्ण गोवा स्तब्ध हो गया। कोंकणी का एक युग पुरुष हमारे बीच से चला गया। मैं व्यक्तिगत रूप से एवं प्रयास संस्था की ओर की कोंकणी के उस महान रचनाकार के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।